IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

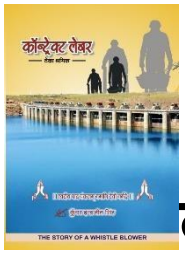

कॉन्ट्रेक्ट लेबर (ठेका श्रमिक) : सिीक्षा

कॉन्ट्रेक्ट लेबर

समीक्षा रू डॉ॰ नीललमा दबेु उपन्त्यासकार कुंवर डुंद्रजीत लसहुंु

बगैंलरुु एकनाटक

आधननक उपन्त्यासकार कु ुंवर डुंद्रजीत लसहुंु द्वारा ललखित उपन्त्यास कॉन्ट्रेक्ट लबे र ,ठेका श्रलमकद्धएऐसे सुंवेदनशील ववषय का स्पश ा करता है जजस पर आज तक शायद ही ककसी ने कलम चलाने की हहम्मत जटाई हो। सुंववदा कमचाु ाररयों की ननयनत व सुंघष ाकी वह उलझन जजसमे डुंसान कामकाजी दननयाुंं म ेु तो त्रासदी भगतता ही हुै ए व्यजक्तगत जीवन भी कई मायनों में दाुंव पर लग जाता है। कथावस्त की दजटट से यह उपन्त्यास बेहद महत्वपु र् ाू दस्तावजे है। यह न केवल समसामनयक है वरन ननजी व सरकारी महकमों में कायशा ैली का आईना भी है। सात अध्यायों में ललि इस उपन्त्यास की अनक्रमखर्का भी ववषेश ध्यान आकवषताु करती है। जहाुंं वषों के साथ ववक्रम सवुंत भी ललि ेगये हैं। यह लेिक की साुंस्कृनतक रचनाधलमताा को दशााते हैं। यह परा उअपन्त्यास नायक के आस पास ही घू मता है। प्रथम तीन अध्यायों में यू वराज चयन की सभी ु प्रकक्रयाओुं को परा करके एक सरकारी डुंजीननयररग कॉलेज में राुंसलेटर के रुप प्रवेश करता है। यहाुंं ू अनेक डुंजीननयस ा को बनते देिता है। किर धीरे धीरे सत्य से साक्षातकार कर अपने हक ,ननयलमत ननयजक्तद्ध के ललए कमर कस लेता है। यहा ुंु अपन ेसमान साथथयों को भी साधता हुआ वह जजस व्यवस्था व अथधकाररयों स ेलोहा लतेा है यह उसका भाग्य ही था कक उसके द्वारा दसरों का भला हू ुआएलकेकन उसे पररसर छोडना पडता है । पररसर छूटा मगर हहम्मत नहीुं। उसका जझारुपन ही था कक पनबबजली ु पररयोजना जैसी नई कमभालम में भी उसने जल्दी ही अपनी धाक जमा ली। जहा ुंू वह वपछले सुंस्थान में अपने जैसे चार सुंववदा सथथयों के ललए लडा यहाुंं चार सौ ऐसे कमचा ाररयों के हक और सम्मान के ककए कहटबध्द हो चका था। ु यहाुंं ष्सेम स्टेटसए सेम पोस्ट

का वादा करए मकरे अथधकारीु ए मन ही मन उसकी कायशा ैलीए व्यजक्तत्व और अुंदाज को स्वीकारते थे। अनेक आयोजनए सलेमनारए उत्तम कायाए ननगम को परस्कार के स्तर तक ु पहुुंचानाए पीण्एमण् के भाषर् का ड्राफ़्टनोट तैयार करनाए उसका ये सब कुछ ननयलमत कमचा ाररयों की तलना में कहीुं अथधक था। इतना सब देकर भी प्रनतदान में वतेु न वद्ृथध व ननयलमत ननयृ जक्त के प्रश्न ु यथावत ही रहे। इसके उत्तर में अथधकाररयो ने यवु राज को परी तरह अनदेिा कर उन चार सौ लोगों के ू साथ ही िडा कर हदया जो सुंववदा कमी तो थे लकेकन कायका ालएक्षमता आहद में यवराजु के बराबर नहीुं। यहीुं से उसके सुंघष ा में वह पररवतना आया जजसके बारे में ककसी ने कल्पना नहीुं की थीए स्वयुं यवराज ु ने भी नहीुं।

अध्याय चार और पाुंच को सबसे महत्वपर् ाू माना जाना चाहहएए क्योंकक यहीुं स ेयवराज के सवश्रा ु ेटठ सुंववदा कमी से ब्व्हीलसल ब्लोअरब् बनने की मालमका कहानी आरुंभ हुई। स्वहहत से सवहाहत की ओर जाना ही हैए अब सबका वेतन बढवाना और ननयजक्त ननयलमत करवाना ही है ए इस सुंकल्प को लके र वह आगे बढा तो रर्नीनत बनाना अननवाय ा बन गया। इस माग ा में लसिाररशए भाई भतीजावादए आुंतररक राजनीनतए चाटुकाररताए ईटया द्वेश आहद न ेअनेक बार पटका लकेकन हर बार वह दगु नी ताकत स ेु उठा। सपरवाइजरु ए हहन्द्दी अथधकारी की पोस्ट हाथ आत ेआत ेरह गई। तब थचठ्ठी ललिकर परी व्यवस्था को ू हहलाकर रिने क दम रिन ेवाला यवराज जानता था कक यह राह परहहत की है एशासन को झकना ही ु होगा। वही हुआ। यवराज की मेहनत और दबुंग कोलशश रुंग लायी। कु ुछ सुंववदा कमी ननयलमत हुएए कुछ प्रलशक्षर् में डाल हदए गयेए परुंत यु वराज की झोली लसिाररश के चलते अभी भी िाली थी। भती ु प्रकक्रया के चलते ककसी और का आ जाना उसे मुंजर नहीुं था।ू अध्याय छह व सात पररर्ाम दटटा के रुप में इसी ननगम में रहनाए अपन े साथथयों को आग े बढत े देिा मन ही मन आनुंहदत होना उसे सुंतटट करता था। सन २००७ में इस कमभाु लम को नमन कर महवष ाू लशक्षा ससुुंथान की ओर रुि करना यवराज के जीवन अगला अध्याय ही समझना चाहहए।ु इस परे उपन्द्यास पर ववहुंगू म दजटट डाली जाय तो कहा जा सकता है कक इसका अुंत सबसे अथधक प्रभावशाली है जहाुं यह स्पटट महसस होता है कक यू ुवराज जजस भी सुंस्थान या ननगम से जडे और ु टकराये परुंत अथधकाररयों के वप्रय हमेशा बने रहे ववरोध व सुंघष ाु सदा बना रहा लेककन यवराज को ु हृदय में ववशषे स्थान देते रहे । यही कारर् है कक कमभालम छोडने के बाद भी उनके सभी से सौहाद्रपू र् ाू सुंबुंध बने रहे । ककसी के प्रनत कोई लशकायत या कठोर भाव नहीुंए सहजता से सब स्वीकार कर आग े बढना ए इस उपन्द्यास की श्रेटठ लशक्षा है जजसे सभी पाठकों को समझना चाहहए। साथ ही यह उपन्द्यास हमें एक और बात स्पटट करता है कक ठेका श्रलमक जैसी भयावह कठनाई को हल ककया जा सकता है। अगर यह सुंभव नहीुं होता तो कुछ जो ननयलमत हुए वह कैसे होतेघ् शासन को इस बात पर गुंभीरता से कदम उठाने चाहहए ताकक यवराज ु एआनराधा जैसे यु वा लडने में नहीुं ककसी ु रचनात्मकता में उजाा लगाकर सम्मान से जी सकें। इस उपन्द्यास की भाषा सरल है। वाक्य छोटे और अथपार् ाू है यद्यवप अथधकाररयों के पदनाम जैस े सीण्ओण्ए सीण्ईण्डीण् एसण्एमण् आहद का अनेक बार आना व पढना साधारर् पाठकों को बाथधत करता हैए परुंत इस प्रकार के प्रयोग करना शायद लेिु क की वववशता हो सकती है। उपन्द्यास में थचत्रों को व पत्रों को सुंलग्न करना एक नया प्रयोग है। अुंत में सुंक्षक्षजततकरर् पाठकों को कई शब्दों के अथ ा समझने में ननसुंदेह मदद करता है। इस उपन्द्यास के माध्यम से नौकरी व्यवस्था को समझा जा सकता हैए इसललए इसे अथधक से अथधक पढा जाना चाहहए। इस उपन्द्यास द्वारा सुंववदा कलमया ों के हालात सधरें तो ठीक वरना जनमानस को इस वातावरर् के प्रनत चेतना तो अवश्य लमलेगी ु ही।